13

''अभी वह समय है''

उद्धार के बारे में अध्ययन मात्र बौद्धिक अभ्यास ही नहीं होना चाहिए। यदि यह किसी व्यक्ति को उद्धार के लिए प्रभु की पेशकश स्वीकार करने की ओर नहीं ले जाता तो इसने अपना उद्देश्य पूरा नहीं किया है। यदि यह उसे किसी प्रकार से बदलता नहीं, तो जो समय उसने अध्ययन में लगाया था, वह व्यर्थ है।

आत्म-परीक्षण का समय

यह समय आत्म-परीक्षण का है। यह समय है कि आप अपनी आत्मा की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में स्वयं बड़ी ही ईमानदारी से पेश आएं। मैं यह फैसला नहीं कर सकता कि आपकी आध्यात्मिक आवश्यकताएं क्या हैं; यह तो केवल आप ही कर सकते हैं। आपको यह फैसला परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं के आधार पर करना चाहिए।

पहले, अपने आप से पूछिये कि क्या आप सचमुच परमेश्वर, यीशु, और बाइबल में विश्वास रखते हैं। यदि आपके मन में बहुत सी शंकाएं हैं तो उस व्यक्ति को बताएं जिसने आपको यह पुस्तक दी थी। अतिरिक्त अध्ययन के लिए आप मिलकर समय दे सकते हैं। मैं आपसे बाइबल पढ़ना जारी रखने का आग्रह भी करता हूं, क्योंकि ''विश्वास ... मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17; यूहन्ना 20:30, 31 भी देखिए)। यदि आप यीशु में विश्वास *करते* हैं तो क्या आप अपने विश्वास का अंगीकार करने के इच्छुक हैं?

और, क्या आप अपने खोये होने और पाप में डूबे होने की स्थिति से अवगत हैं? क्या आप परमेश्वर की सहायता से एक उत्तम जीवन जीने के लिए समर्पित होने के लिए तैयार हैं?

यदि आपने यहां तक उत्तर ''हां'' में दिया है, तो अपने आप से पूछिये कि क्या परमेश्वर के वचन के अनुसार आपका बपतिस्मा हो गया है। प्रश्न यह नहीं है कि आपने उस संस्कार अथवा रस्म को पूरा किया है या नहीं, जिसे ''बपतिस्मा'' कहा जाता है, बल्कि यह है कि क्या आपका बपतिस्मा ठीक वैसे ही हुआ है या नहीं, जैसे नया नियम सिखाता है। इस पुस्तक के परिचय में वापस जाकर, वह प्रश्नावली देखें, जो आपने भरी थी। जो कुछ बपतिस्मे के बारे में आपने लिखा था, उसकी तुलना उससे कीजिए जो बाइबल सिखाती है। (पाठ 4 और 5 पर पुनर्विचार कीजिए।) यदि आपका बपतिस्मा वैसे नहीं हुआ जिसका वर्णन बाइबल में किया गया है, तो निश्चय ही आपको वचन के अनुसार पुन: बपतिस्मा लेना चाहिए। जिसने आपको यह पुस्तक दी थी उससे बात कीजिए; वह इसके लिए प्रबन्ध करने

में आपकी सहायता करेगा।

यदि आपका बपतिस्मा वचन के अनुसार था तो फिर आपको चाहिए कि उससे आराधना के बारे में पूछें। क्या आप किसी वैसी कलीसिया में आराधना और सेवा कर रहे हैं, जो नये नियम में बताई गई कलीसिया जैसी है ?

शायद आप किसी धार्मिक संगठन से नहीं जुड़े हैं। यदि यह बात सही है, तो मैं पुन: आप से आग्रह करूंगा कि आप अपने निकटतम स्थान में मसीह की कलीसिया को ढूंढ़िए। मसीह की कलीसियाएं आपको ''उन्हें परखने'' के लिए उत्साहित करती हैं (देखिए 1 यूहन्ना 4:1)। जिसने आपको यह पुस्तक पढ़ने के लिए दी सम्भवत: वह मसीह की कलीसिया का कोई सदस्य होगा; यदि ऐसा है, तो आपके प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ने में उसे प्रसन्नता होगी।

दूसरी ओर, शायद आप किसी धार्मिक संगठन के साथ जुड़े हो सकते हैं। यदि ऐसा है, तो आपको कलीसिया के बारे में नये नियम की शिक्षा के प्रकाश में इसकी जांच करनी चाहिए। (6 से 11 पाठों पर पुनर्विचार कीजिए।) पाठ 11 में जिस रूपरेखा का प्रयोग हमने किया था, वही ढंग अपनाएं। यदि आपकी कलीसिया वचन के नमूने के अनुकूल नहीं है, तो आपको एक आध्यात्मिक घर के लिए कहीं और देखना चाहिए।

आज्ञाकारिता के लिए समय

एक बार जब आपको यह समझ आ जाए कि आपको क्या करना चाहिए तो आपको देरी नहीं करनी चाहिए। आपको अभी और कार्य करना होगा। अध्ययन समाप्त करते हुए मैं आपको बाइबल की इन तीन आयतों पर विचार करने के लिए कहूंगा:

पहली याकूब 4:17 है। याकूब कहता है, ''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है।'' क्या आप ''भलाई करना'' जानते हैं ? क्या आप जानते हैं कि आपको बपतिस्मा लेना चाहिए ? यदि आप जानते हैं परन्तु करते नहीं, तो यह पाप है। क्या आप का प्रभु में लौटना आवश्यक है ? यदि आप यह करने में नाकाम होते हैं, तो यह पाप है। क्या आप जानते हैं कि आपको धार्मिक तौर पर बदलाव की आवश्यकता है ? जो आप जानते हैं कि आपको करना चाहिए, यदि आप उसे करने से इन्कार करते हैं, तो यह पाप होगा।

दूसरी आयत यूहन्ना 14:15 है। यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।'' यदि आप यीशु से प्रेम करते हैं और आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है तो आप बपतिस्मा लेंगे। यदि आप यीशु से प्रेम करते हैं और आपको अपने जीवन में सुधार की आवश्यकता है तो आप सुधार करेंगे। यदि आप यीशु से प्रेम करते हैं और धार्मिक रूप से आपको बदलाव की आवश्यकता है तो आप वह बदलाव करेंगे।

तीसरी आयत 2 कुरिन्थियों 6:2 है। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि वह तो कहता है, कि अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैंने तेरी सहायता की: देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।'' एक बार जब आपको

समझ आ जाए कि आपको क्या करना चाहिए, फिर भी यदि आप उसे नहीं करते तो इन में से तीन बातें हो सकती हैं:

- हो सकता है कि आपके आज्ञा मानने से पहले प्रभु लौट आए। बाइबल आपको उसकी वापसी के लिए तैयार रहने के लिए कहती है, ''क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा'' (मत्ती 24:44)। यदि परमेश्वर चाहे तो वह आज ही और अभी आ सकता है।
- हो सकता है कि आपके आज्ञा मानने से पहले आपकी मृत्यु हो जाए। किसी भी मनुष्य का जीवन पट्टे पर नहीं है। ''... मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27)।
- हो सकता है कि आपका मन कठोर होता जाए। जितनी बार कोई मनुष्य यीशु के निमन्त्रण को ठुकराता है, उसका मन उतना ही कठोर होता जाता है। मसीह की आज्ञा मानना कठिन और उसे ठुकराना आसान होता जाता है। कोई व्यक्ति इतना भी कठोर हो सकता है कि उसके लिए मन फिराना असम्भव हो जाए (इब्रानियों 6:4-6)। इब्रानियों 4:7 आग्रह करता है, ''यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो।''

सारांश

मुझे आशा है कि हमारे साथ मिलकर अध्ययन करने से आपको यह समझने में सहायता मिली होगी कि आपको ''परमेश्वर के पास'' आने के लिए क्या करना चाहिए (इब्रानियों 7:25; याकूब 4:8)। यदि आपको सहायता मिली है, तो मेरी प्रार्थना है कि जो कुछ आप जानते हैं कि वह आपको करना चाहिए तो उसे करने में आप देरी न करें। जिसने आपको यह पुस्तक दी है उसके साथ बात कीजिए; वह आज के लिए शान्ति और कल के लिए आशा ढूंढ़ने में आपकी सहायता करने को उत्सुक है।

जीवन के मुकुट को पाने की मेरी सच्चे मन से इच्छा है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। मैं स्वर्ग में जाना चाहता हूं, जहां परमेश्वर ''[हमारी] आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; [क्योंकि] पहिली बातें जाती रहीं'' (प्रकाशितवाक्य 21:4)। मैं हर रोज़ प्रार्थना करता हूं कि मेरे प्रियजन वहां हों। मुझे आशा है कि वहां मुझे आप भी मिलेंगे। परमेश्वर आपको आशीष दे!